एक इमाम दबदबे का नाम

मु0 र0 आबिद

शहर की एक खुली जगह........किल्कारियाँ भरते कुछ बच्चे खेलते हुए। वहीं एक बराबर का प्यारा बच्चा कुछ अलग–थलग सा रोता हुआ। इसी में एक प्यार का दीवाना, समझदारी का ख़ज़ाना उधर से गुज़रता है। बहलाने के अन्दाज़ में रोते हुए बच्चे को खिलौना ला देने को कहता है। लेकिन बच्चा कहता है कि रोना तो इसी पर है कि यह खेल–खेल में ज़िन्दगी बर्बाद कर रहे हैं। हम इसलिए नहीं पैदा हुए हैं।

'हायँ! तो फिर किस लिए पैदा हुए हैं?' 'इबादत के लिए' 'यह कैसे पता चला?' 'क्या आपने क़ुर्आन नहीं पढ़ा हैः– क्या तुमने यह समझ लिया है कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है और क्या तुम हमारी ओर पलटकर नहीं आओगे?' (ओह! बातों का यह स्तर, सोंच की यह उठान, दीन का यह ध्यान, क़ुर्आन की इतनी गहरी नज़र,...............और इतनी छोटी उम्र!!) 'लेकिन आप तो बहुत छोटे हैं। आपके लिए गुनाह सोचा भी नहीं जा सकता। आप क्यों रो रहे हैं?'

'छोटे होने से क्या? मैंने देखा है कि मेरी माँ बड़ी लकड़ियों को सुलगाने के लिए छोटी लकड़ियाँ/खपच्चियाँ लगाती हैं। मुझे डर है कि कहीं जहन्नम के बड़े ईंधन के लिए हम छोटे बच्चों को न लगा दिया जाए।'

धर्म दर्शन का यह सबक़ पढ़ाने वाला बच्चा कोई और नहीं हमारे ग्यारहवें इमाम हसन असकरी (अ0) थे और वह बात करने वाले थे बहलोल दाना।

यह था बचपन से आपका दबदबा, पैदाइशी, स्वभाविक दबदबा, ख़ुदाई दबदबा।

इमाम की नौजवानी है। सम्राट मुस्तईन अब्बासी का राज है। वह आपके पिताश्री इमाम अली नक़ी (अ0) को क़ैद कर चुका है और आप दोनो बाप–बेटों को सताने की भरसक कोशिश में लगा हुआ है। उसने एक बड़ा महंगा घोड़ा लिया। लेकिन वह बहुत शरीर, सरफिरा निकला, किसी को भी सवारी न देता बल्कि जो भी पास आता उसे पटककर टापों से कुचल डालता। एक दरबारी के कहने पर मुस्तईन ने यह घोड़ा इमाम को दिया कि सवारी करें (यह सोच कर कि अगर वह घोड़ा इमाम का भी काम तमाम कर देता है तो उसकी दिली मुराद आ जाएगी वरना वह इस बहाने राम हो जाएगा तो भी एक मतलब निकल आयेगा यानी पट भी उसकी चट भी उसकी।) इमाम (अ0) से घोड़ा राम हो गया और भीगी बिल्ली बन गया। यह था इमाम का दबदबा, घुड़सवारी की महारत का दबदबा, ख़ुदाई दबदबा जिससे जानवर तक राम हो जाया करते थे। बहरहाल मुस्तईन पर इमाम का दबदबा इतना छा गया कि वापस घोड़ा लेने के बजाए इमाम ही को दे दिया।

इस्हाक़ कन्दी उस वक़्त का एक बहुत बड़ा विद्वान, दार्शनिक और वैज्ञानिक था। उसने क़ुर्आने मजीद की आयतों और उसकी बातों (विषयों में) आपसी टकराव साबित करने की ठानी। इमाम (अ0) को मालूम हुआ तो उसके

कुछ चेलों से कहा कि उसे इस काम से बाज़ आने को कहें। उन्होंने कहा कि वह उनका गुरु है उससे कैसे कह सकते हैं। इमाम (अ0) ने कहा कि अच्छा यह काम तो कर सकते हो कि पहले उसके बहुत क़रीबी हो जाओ और जब वह तुम पर पूरा–पूरा भरोसा करने लगे तो बातों–बातों में उससे पूछो कि अगर क़ुर्आन का लेखक (अल्लाह) आपके पास यह किताब लाए। तो क्या ऐसा नहीं हो सकता कि उससे जो मतलब आप समझें उसका आशय या मतलब वह न हो बल्कि उसके अलावा हो? वह समझदार है इसलिए वह हाँ मे जवाब देगा। अगर ऐसा हो तो उससे कहना कि फिर आप जो अपनी समझ से उसमें आपसी टकराव साबित करने में लगे हैं वह बेकार नहीं हो जाता। उन चेलों ने वैसा ही किया और वैसे ही कहा। वह चूँकि बड़ा समझदार था उसने उन चेलों से पूछा कि सच–सच बताओ यह बात किसने बतलायी। उन लोगों ने कहा किसी ने नहीं बल्कि उनके अपने मन में आयी। लेकिन वह नहीं माना कि उनकी सोच से यह बहुत ऊँची बात है। बहुत कहने पर उन लोगों ने इमाम (अ0) का नाम ले लिया। उसने कहा कि हाँ अब तुमने सही बात बताई। और यह बात उस घर के अलावा कोई नहीं सोच सकता। उसने उसी समय अपनी किताब का पूरा मसौदा (पाण्डुलिपि) मंगाया और उसमें आग लगा दी। इस तरह इमाम की सूझबूझ ने क़ुर्आन के ख़िलाफ एक बहुत बड़े दार्शनिक और बुद्धजीवी (Intellectual) तूफ़ान को टाल दिया। यह है इमाम के ज्ञान, दर्शन और सूझबूझ का दबदबा।

इमाम (अ0) के नाम, शान और सामाजिक गौरव व हैसियत का दबदबा ही था कि डांवाडोल राज के एक के बाद एक गद्दी हत्याने वाले ने राजनीति से दूर रहने वाले सज्जनता, नेकी और शालीनता की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले इमाम (अ0) को सताने में कोई कसर न उठा रखी। इमाम को कभी जेल की काली कोठरी में, कभी घर में ही बन्दी बनाकर, कभी जासूसों के पहरे में और कभी सरकारी पहरे के कटघरे में रखा गया, कभी चैन की साँस न लेने दी गयी। लेकिन इमाम के धैर्य, सब्र, सहन शक्ति, चाल–चलन, शालीनता और इबादत के दबदबे के आगे कभी पहरेदारों का सारा क्रूर चकनाचूर और बेदर्दी चित हो जाती, कोई सताते–सताते थक हार कर माफी माँग लेता।

इसी बीच 869 ई0/256 हि0 में पिछले तीन साल से पड़ने वाले सूखे का भयानक रूप सामने आता है। जनता भूक प्यास से मर रही है। लोग नमाज़, दुआ और इस्तेस्क़ा (पानी माँगने की ख़ास नमाज़) की नमाज़ पढ़ते–पढ़ते थक चुके लेकिन सूखा जाने का नाम नहीं लेता। ऐसे में एक ईसाई सन्यासी आता है दुआ करता है, घटाएँ घिर–घिर कर बरसती हैं, जल थल हो जाता है। देखते–देखते लोगों के मन धर्म ईमान से फिरने लगते हैं। इस्लाम के नाम पर चलाने वाले राज्य को दिन में तारे दिखाई देने लगते हैं। पैरों के नीचे की ज़मीन खिसकते दिखाई देती है। गद्दी उसी पानी में बहती दिखाई पड़ती है। कुछ समझ में नहीं आता। सारी अक़्लें चरने चली गईं। एक ही रास्ता सूझता है। इमाम (अ0) को जेल से निकाला जाता है कि कुछ रास्ता बताएँ। आप देखते हैं। सन्यासी से फिर दुआ करने को कहते हैं। जब वह दुआ करने को हाथ उठाता है घटाएँ फिर घिरने लगती हैं। इमाम कहते हैं कि इसके

बक़िया ....पेज 14 पर

(बातिन) साफ़ सुथरा होता है, नेकी से लापरवाही नहीं करते और इस रास्ते पर चलने की नतीजे में वे निश्चिय–ज्ञान (इल्मुलयक़ीन–जानकारी से यक़ीन करना) तक और निश्चय ज्ञान से निश्यन–दर्शन (ऐनुलयक़ीन–देखकर यक़ीन करना) तक और उसके बाद निश्चय–दर्शन से निश्चय–सत्य (हक़्क़ुलयक़ीन–यक़ीन का सत्य) तक पहुँच जाते हैं।

(जारी)

बक़िया......................

एक इमाम———दबदबे का नाम

हाथ में जो चीज़ दबी है वह ले ली जाए। उसकी उंगलियों के बीच एक हड्डी थी वह ले ली जाती है और इसे इमाम दफ़न कर देते हैं। अब उससे दुआ करने को कहा जाता है। अब तो घिरी हुई घटाएँ भी छटने लगती हैं। दूर–दूर तक कहीं भी एक बून्द दिखाई नहीं पड़ती। पूछने पर इमाम (अ0) बताते हैं कि यह एक नबी की हड्डी है और ऐसी हड्डी में यह असर होता है कि जब भी यह आसमान के नीचे लायी जाएगी तो रहमत की बारिश ज़रूर होगी। सन्यासी की दुआ का सारा राज़ इमाम (अ0) के ज्ञान ध्यान और सूझबूझ के दबदबे से खुल गया। अब इमाम (अ0) ने दुआ की, पानी बरसा ख़ूब बरसा, सूखा हरन हुआ। लोगों में ईमान निष्ठा का सूखता हुआ बीज फिर से लहलहाती खेती के रूप में लहलहाने लगा।

अब इमाम के दबदबे के आगे बादशाह (मोअ्तमिद अब्बासी) को इमाम को जेल से छोड़ने के अलावा कुछ न बन पड़ा। अब इमाम की शान, दबदबा, जनप्रियता, और मान सम्मान और भी बढ़ गया, बल्कि बढ़ता रहा। इमाम के चाल–चलन की धाक वज़ीरों और राजदरबारियों तक पहुँच चुकी थी। एक ही साल आज़ादी की साँस ले सके कि बादशाह अपनी पुरानी सूरत में आ गया और आपको फिर काल–कोठरी में बन्द कर दिया गया। यह दबदबे के ख़िलाफ़ सरकारी आतंक का एक रूप था। पर काल–कोठरी इमाम (अ0) के किरदार, इबादत, मान सम्मान, शान, साख के दबदबे को कम न कर सकी बल्कि और बढ़ावा ही दे गई। आख़िरकार मोअ्तमिद ने चाल से इसी जेल में इमाम को ज़हर दिलाया। इस तरह खुदाई दबदबे के इस आख़िरी प्रत्यक्ष निशान को दुनिया से मिटा दिया गया।

अब तक के सभी ग्यारह इमाम शहीद हुए, तलवार से या ज़हर से। आख़िरी बारहवें इमाम को खुदा की मसलहत ने ग़ैबत (गोप/अदृश्यता) के पर्दे में रख दिया। जब उसका हुक्म होगा तो ग़ैबत दूर होगी और इमाम (अ0फ0) का ज़हूर होगा और अन्याय, ज़ुल्म से भरी पूरी दुनिया में न्याय, ईमान, धर्म व सत्य का बोलबाला हो जाएगा। अमन चैन, सुख, समृद्धि का राज्य हो जाएगा। दुनिया से बेचैनी, अन्याय, दुख, संकट, ज़ुल्म, ज़ोर ज़बरदस्ती, आतंक, बेईमानी आदि सारी बुराइयाँ दूर हो जाएँगी। ख़ुदाई दबदबे का दबदबा होगा। ख़ुदा करे वह दिन जल्दी आए।

□□□